DAWAT-E-ISLAMI

रिसाला नम्बर : 131

Mendak Suwaar Bichchhu (Hindi)

मेंडक सुवार बिच्छू

(मअ़ मुसीबत की फ़ज़ीलत, 32 रूहानी इलाज)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मेंडक सुवार बिच्छू

येह रिसाला (**मेंडक सुवार बिच्छू**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मेंडक सुवार बिच्छू

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (29 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आफ़तों पर सब्र की सोच परवान चढ़ेगी ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर अस्सी बार दुरूदे पाक पढ़े उस के अस्सी साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे । (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخِطاب ج۲ص۴۰۸ حديث۳۸۱۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के साथ किसी तालाब के कनारे ह़ाज़िर था, अचानक हमारी नज़र एक बहुत बड़े **बिच्छू** पर पड़ी, इतने में एक बड़ा सा **मेंडक** तालाब से निकल पड़ा ! **बिच्छू** उस **मेंडक** पर सुवार हो गया ! अब मेंडक तैरता हुवा तालाब के दूसरे कनारे की त़रफ़ बढ़ने लगा । येह मन्ज़र देख कर हम तेज़ी से तालाब के उस पार जा पहुंचे, कनारे पर पहुंच कर **मेंडक** ने **बिच्छू** को उतार दिया, **बिच्छू** तेज़ी से एक सम्त चल दिया, हम भी उस के तआ़क़ुब में

www.dawateislami.net

(या'नी पीछे पीछे) रवाना हुए, कुछ दूर जा कर हम ने एक लरज़ा ख़ैज़ मन्ज़र देखा, एक नौ जवान नशे की ह़ालत में बेहोश पड़ा था, अचानक एक **ख़ौफ़नाक सांप** कहीं से आ निकला और उस नौ जवान के सीने पर चढ़ गया और उस ने जूं ही उसे डसना चाहा, **बिच्छू** ने उस पर ह़म्ला कर दिया और ऐसा ज़हरीला डंक मारा कि **ख़ौफ़नाक सांप** ज़ह्र के असर से तल-मलाता हुवा (या'नी बेचैन हो कर) नौ जवान के जिस्म से दूर हट गया और तड़प तड़प कर मर गया, **बिच्छू** तालाब के कनारे आ कर उसी **मेंडक** पर सुवार हो कर दूसरे कनारे की त़रफ़ रवाना हो गया । वोह नौ जवान अभी तक नशे में बेहोश पड़ा था । ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने उस को हिलाया जुलाया तो उस ने आंखें खोल दीं, आप ने फ़रमाया : ऐ नौ जवान ! देख **ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ ने किस त़रह़ तेरी जान बचाई है ! और **मेंडक सुवार बिच्छू** और **ख़ौफ़नाक सांप** की अनोखी दास्तान सुनाई और मरा हुवा सांप दिखाया ।

नौ जवान ख़्वाबे ग़फ़्लत से जाग उठा, तौबा की और अपने प्यारे प्यारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबारे करम-बार में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "**ऐ ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ ! जब अपने बन्दगाने ना फ़रमान के साथ तेरे फ़ज़्लो एह़सान की येह शान है, तो अपने ताबेए़ फ़रमान बन्दों पर बाराने रह़मत का क्या आ़लम होगा !" रावी फ़रमाते हैं : इस के बा'द वोह नौ जवान एक जानिब चल दिया, तो मैं ने पूछा : "कहां का इरादा है ?" कहने लगा : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अब मैं (दुन्या की रंगीनियों से दूर रहते हुए)

www.dawateislami.net

जंगलों में अपने रब्बे रह़मत عَزَّوَجَلَّ की इबादत किया करूंगा ।

(عُیُونُ الْحِکایات ص ۱۰۲ مُلَخَّصاً)

अल्लाह के हर काम में ह़िक्मत होती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **मेंडक सुवार बिच्छू** ने किस त़रह़ नशे में धुत शराबी नौ जवान को **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से **ख़ौफ़नाक सांप** की मुसीबत से बचाया ! यक़ीनन रब्बे रह़मत عَزَّوَجَلَّ की ह़िक्मत को समझने से हम क़ासिर हैं, उस के हर हर काम में ह़िक्मत होती है, किसी को **मुसीबत** में मुब्तला करना भी ह़िक्मत तो किसी को बे त़लब **मुसीबत** से बचा लेना भी ह़िक्मत । बा'ज़ अवक़ात बन्दा **मुसीबत** में फंसा होता है तो बारगाहे ख़ुदा वन्दी में झुकता और उस की इबादत की त़रफ़ रुख़ करता है और कभी ऐसा भी होता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब सर पर आ पहुंचने वाली **मुसीबत** से ह़िफ़ाज़त कर के एह़सान फ़रमाता है तो बन्दए ना फ़रमान ताबेए़ फ़रमान हो जाता है, जैसा कि इस ह़िकायत **''मेंडक सुवार बिच्छू''** से ज़ाहिर हुवा ।

गुनाहों का है सुदूर आह ! हर घड़ी या रब
कर अ़फ़्व हाए ! अजल सर पे है खड़ी या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह जो करता है बेहतर करता है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की

www.dawateislami.net

मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''उ़यूनुल ह़िकायात''** (ह़िस्सए अव्वल) के सफ़ह़ा 187 पर है : **अल्लाह** का एक नेक बन्दा किसी जंगल की बस्ती में रहा करता था । उस के पास एक **मुर्ग़ा**, एक **गधा** और एक **कुत्ता** था । **मुर्ग़ा** सुब्ह़ **नमाज़** के लिये जगाता, **गधे** पर वोह पानी और दीगर चीज़ें लाद कर लाता और **कुत्ता** उस के मकान व सामान की रखवाली करता । एक दिन **मुर्ग़े** को लोमड़ी खा गई, घर के अफ़राद इस नुक़्सान पर परेशान हुए मगर उस नेक शख़्स ने **सब्र** किया और कहा : **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है बेहतर करता है ।''** चन्द दिन के बा'द भेड़िये (WOLF) ने **गधे** को चीर फाड़ डाला, अहले ख़ाना ग़मगीन हुए लेकिन उस नेक आदमी ने येही कहा : **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है बेहतर करता है ।''** फिर कुछ अ़र्से बा'द **कुत्ता** बीमार हो कर मर गया, इस पर भी उस ने येही अल्फ़ाज़ दोहराए : **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है बेहतर करता है ।''** कुछ रोज़ के बा'द यकायक दुश्मनों ने जंगल की उस बस्ती पर **शबख़ून** मारा (या'नी रात में ह़म्ला कर दिया) और जानवरों की आवाज़ें सुन सुन कर घरों का खोज (या'नी पता) लगाया और माल व अस्बाब समेत सब घर वालों को क़ैदी बना कर ले गए। उस नेक शख़्स के घर में कोई जानवर था ही नहीं जो बोलता लिहाज़ा दुश्मन को अंधेरे में उस के मकान का पता ही न चल सका, और इस त़रह़ वोह इस आफ़ते **ना-गहानी** (या'नी अचानक आने वाली मुसीबत) से मह़फ़ूज़ रहा और यूं सब्र के साथ साथ इस का यक़ीन मज़ीद मज़बूत हो गया कि **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है बेहतर करता है ।''** (عیونُ الحکایات ص۱۲۱ مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अगर डाकू आ जाता तो.....?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से दर्स मिला कि जब भी कोई बीमारी, परेशानी, बे रोज़गारी वग़ैरा आज़्माइश आ पड़े हमें येही समझना और कहना चाहिये कि "**अल्लाह जो करता है बेहतर करता है।**" क्यूं कि हर मुसीबत से बड़ी मुसीबत होती है। म-सलन घर में चोरी हो जाए तो अगर्चे माली नुक़्सान हुवा है मगर येही कहना चाहिये **:** "**अल्लाह जो करता है बेहतर करता है।**" क्यूं कि अगर डाकू ह़म्ला करते तो शायद माली नुक़्सान के साथ साथ जानी नुक़्सान भी हो जाता ! येह भी ज़ेह्न में रहे कि बसा अवक़ात दुन्या में मिलने वाली ने'मत बहुत बड़ी मुसीबत का बाइ़स भी बन जाती है, म-सलन किसी का पांच करोड़ का बोंड खुला ! ब ज़ाहिर येह ख़ुशी के मारे पागल कर देने वाला मुआ़-मला है मगर उसे क्या मा'लूम कि उस के ह़क़ में येह ने'मत है या मुसीबत ? आया इस रक़म के ज़रीए़ मस्जिद की ता'मीर की सआ़दत मिलेगी या इस दौलत के सबब डाकूओं के ज़रीए़ जान भी चली जाएगी ! किस को मा'लूम कि येह करोड़ों रुपै ऐ़शो इ़शरत में वुस्अ़त के लिये आए हैं या इन्आ़म याफ़्ता के लिये अपने या घर के किसी अहम फ़र्द की बीमारी के इ़लाज के लिये पहुंचे हैं ! जी हां ! ऐसा होना मुम्किन है। चुनान्चे इस ज़िम्न में एक सच्ची ह़िकायत सुनिये **:**

जिगर की तब्दीली (ह़िकायत)

एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान कुछ यूं है कि मेरे एक अ़ज़ीज़ जिन्हों ने सारी ज़िन्दगी मेह़नतो मशक़्क़त कर के काफ़ी दुन्यवी माल जम्अ़ किया और अब वोह एक फ़ेक्टरी के मालिक हैं, उन्हें डॉक्टरों ने इ़लाज के लिये जिगर (LIVER) की तब्दीली का मश्वरा दिया है जिस पर कमो बेश 75 लाख रुपै का ख़र्च मु-तवक़्क़ेअ़ है। जिस के लिये वोह बेचारे बरसों की मेह़नत से क़ाइम कर्दा फ़ेक्टरी बेचने की तरकीब बना रहे हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस इ़ब्रत नाक ह़िकायत पर ग़ौर फ़रमाइये ! जब उन्हों ने काम की इब्तिदा की होगी और कारोबार तरक़्क़ी के ज़ीने तै़ करने लगा होगा तो कितनी ख़ुशी ह़ासिल हुई होगी ! मगर उन्हें क्या मा'लूम था कि येह लाखों रुपै अपने जिगर की तब्दीली के लिये जम्अ़ कर रहे हैं। शर-ई मस्अला याद रखिये कि आ'ज़ा की तब्दीली जाइज़ नहीं।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह मह़ल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आज़्माइशों की बारिश

मुसीबत ज़दो ! हिम्मत मत हारो ! मुसीबतें اِنْ شَآءَاللّٰه दोनों

www.dawateislami.net

जहानों में बेड़ा पार करवा देंगी चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से महब्बत फ़रमाता है तो उस पर **आज़्माइशों की बारिश** बरसाता है फिर जब वोह बन्दा अपने रब عَزَّوَجَلَّ को पुकारता है : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ !'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''मेरे बन्दे ! तू जो कुछ मुझ से मांगेगा मैं तुझे अ़ता फ़रमाऊंगा या तो जल्द ही तुझे दे दूंगा या उसे तेरी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर दूंगा ।'' **(اَلْمَرَض وَالْکَفّارات مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج ٤ ص٢٨٥ حدیث٢١٢)**

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 525 पर है : ह़ज़रते मदाइनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं : मैं ने जंगल में एक औ़रत को देखा तो गुमान किया कि शायद येह बहुत ख़ुशह़ाल है, लेकिन उस ने बताया : ''वोह ग़मों और परेशानियों की हम-नशीन है, एक मर्तबा उस के शोहर ने एक बकरी ज़ब्ह़ की तो उस के बेटों में से एक ने अपने भाई को इसी त़रह़ ज़ब्ह़ करने का इरादा किया और उसे ज़ब्ह़ कर दिया फिर वोह घबरा कर पहाड़ की त़रफ़ भाग गया और भेड़िया (WOLF) उसे खा गया, उस का बाप उस के पीछे गया और प्यास की शिद्दत से वोह भी मर गया ।'' तो आप ने उस से पूछा : तुम्हें सब्र कैसे आया ? उस ने जवाब दिया : वोह तक्लीफ़ तो एक ज़ख़्म था जो भर गया ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

मुझे नाबीना रहना मन्ज़ूर है

हज़रते सय्यिदुना अबू बसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر (जो कि नाबीना थे) फ़रमाते हैं **:** मैं एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **बाक़िर** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر की ख़िदमते सरापा अ–ज़मत में ह़ाज़िर हुवा । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरे चेहरे पर हाथ फैरा तो आंखें रोशन हो गईं, जब दोबारा हाथ फैरा तो फिर **नाबीना** हो गया । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **बाक़िर** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر ने मुझ से फ़रमाया **:** आप इन दोनों बातों में से कौन सी बात इख़्तियार करना चाहते हैं ? ﴾1﴿ आप की आंखें रोशन हो जाएं और क़ियामत के रोज़ आप से बीनाई की ने'मत का और दीगर आ'माल का ह़िसाब लिया जाए ﴾2﴿ आप नाबीना ही रहें और बिग़ैर ह़िसाबो किताब जन्नत का दाख़िला नसीब हो जाए ? मैं ने अ़र्ज़ की **:** जन्नत में बे ह़िसाब दाख़िला चाहिये । मुझे **नाबीना** रहना मन्ज़ूर है । **(شواھدُالنُّبُوَّۃ، ص ۲٤١ مُلَخَّصاً)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى محمَّد

दुख्यारा सब तक्लीफ़ें भूल जाएगा !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उख़्रवी मुसीबतों के सामने दुन्यवी राह़तों की कोई ह़क़ीक़त नहीं, जहन्नम का सिर्फ़ एक झोंका उ़म्र भर की राह़त सामानियों को भुला और ख़ाक में मिला कर रख देगा, इसी त़रह़ उख़्रवी ने'मतों के सामने दुन्यवी तक्लीफ़ों की भी कोई हैसिय्यत नहीं, **जन्नत** का सिर्फ़ एक फेरा ज़िन्दगी भर की तक्लीफ़ों को नस्यम मन्सिय्या (या'नी भूला बिसरा) कर देगा और दुख्यारा बन्दा अपने सारे दुख भूल

www.dawateislami.net

कर येही समझेगा कि मुझे कभी कोई तक्लीफ़ पहुंची ही नहीं जैसा कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : क़ियामत के दिन उस दोज़ख़ी को लाया जाएगा जिसे दुन्या में सब से ज़ियादा ने'मतें मिलीं और उसे जहन्नम का एक झोंका दे कर पूछा जाएगा : ऐ आदमी ! क्या तू ने कभी कोई भलाई देखी थी ? क्या तुझे कभी कोई ने'मत मिली थी ? तो वोह कहेगा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं ।" फिर उस जन्नती को लाया जाएगा जो दुन्या में सब से ज़ियादा तक्लीफ़ में रहा और उसे जन्नत का ग़ोता दिया जाएगा फिर उस से पूछा जाएगा : ऐ इन्सान ! क्या तू ने कभी कोई तक्लीफ़ देखी थी ? तुझ पर कभी कोई सख़्ती आई थी ? तो वोह कहेगा : बख़ुदा ! ऐ मेरे रब ! कभी नहीं, मुझे कभी कोई तक्लीफ़ नहीं हुई और न मैं ने कभी कोई सख़्ती देखी ।

(مسلم ص ۱۵۰۸ حدیث ۲۸۰۷)

"ईमान" का लिबास (ह़िकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी कोई आफ़त आ पड़े ख़्वाह त़वील अ़र्से तक बे रोज़गारी या बीमारी दूर न हो या मसाइल ह़ल न हों, हर मौक़अ़ पर सिर्फ़ **सब्र सब्र** और **सब्र** से काम लेना और आख़िरत का सवाब ह़ासिल करना चाहिये । ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **ऐ मेरे रब !** तेरी रिज़ा के ह़ुसूल के लिये जो मुसीबतों पर **सब्र** करता है उस परेशान इन्सान का बदला क्या है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : उस का

www.dawateislami.net

बदला येह है कि मैं उसे **ईमान का लिबास** पहनाऊंगा और उस से कभी भी नहीं उतारूंगा । (احیاءُ العُلوم ج ٤ ص ٩٠) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वोह इश्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता
जो रन्जो मुसीबत से दोचार नहीं होता

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

करबला वालों से बढ़ कर मुसीबत ज़दा कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! परेशान ह़ाल को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहे और ख़ुद पर "इन्फ़िरादी कोशिश" करते हुए दिल ही दिल में कहे कि शहीदान व असीराने करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर जो मुसीबतें आई थीं वोह यक़ीनन तुझ पर आने वाली मुसीबतों से करोड़ों गुना ज़ियादा थीं मगर उन्हों ने हंसी ख़ुशी बरदाश्त कीं और **सब्र** कर के क़ुर्बे इलाही के ह़क़दार बने । तू कहीं बे सब्री कर के आख़िरत की सआ़दत से महरूम न हो जाए । यक़ीनन यक़ीनन यक़ीनन दुन्यवी परेशानियों, तंगदस्तियों, बीमारियों वग़ैरा में सब्र करने वालों के लिये आख़िरत की ख़ूब ख़ूब राह़त सामानियां हैं ।

रोशन क़ब्रें

किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़क्वान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को उन की वफ़ात के एक साल बा'द ख़्वाब में

www.dawateislami.net

देखा तो इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) : कौन सी क़ब्रें ज़ियादा रोशन हैं ? फ़रमाया : قُبُوْرُ اَهْلِ الْمَصَائِبِ فِى الدُّنْيَا या'नी दुन्या में मुसीबतें उठाने वालों की । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص١٦٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वोह घुप अंधेरी क़ब्र जिसे दुन्या का कोई बर्क़ी बल्ब रोशन नहीं कर सकता, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े परेशान ह़ालों के लिये नूर नूर हो कर जग-मगा उठेगी ।

ख़्वाब में भी ऐसा अन्धेरा कभी देखा न था
जैसा अन्धेरा हमारी क़ब्र में सरकार है
या रसूलल्लाह ! आ कर क़ब्र रोशन कीजिये
ज़ात बेशक आप की तो मम्बए अन्वार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

काश ! हमारे बदन क़ैंचियों से काटे जाते !

जब भी मुसीबत आए **सब्र** कर के अज्र के ह़क़दार बनिये, **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 23 **सू-रतुज़्ज़ुमर** की आयत 10 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद

www.dawateislami.net

नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त लिखते हैं : ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया कि : हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़्न किया जाएगा सिवाए **सब्र** करने वालों के कि उन्हें बे अन्दाज़ा और बे ह़िसाब दिया जाएगा और येह भी मरवी है कि **अस्ह़ाबे मुसीबत व बला** (या'नी मुसीबत ज़दा लोग) ह़ाज़िर किये जाएंगे, न उन के लिये मीज़ान (तराज़ू) क़ाइम की जाए न उन के लिये दफ़्तर (या'नी नामए आ'माल) खोले जाएं, उन पर अज्रो सवाब की बे ह़िसाब बारिश होगी यहां तक कि दुन्या में आ़फ़िय्यत की ज़िन्दगी बसर करने वाले उन्हें देख कर आरज़ू करेंगे कि काश ! वोह अहले मुसीबत में से होते और उन के जिस्म क़ैंचियों से काटे गए होते कि आज येह **सब्र** का अज्र पाते । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 850)

दरिन्दों ने पेट फाड़ डाला था (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक दिन एक आदमी के पास से गुज़रे जिस का पेट दरिन्दों ने फाड़ कर गोश्त नोच लिया था । आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसे पहचान लिया, उस के पास खड़े हुए और दुआ़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह बन्दा तो तेरा फ़रमां बरदार था मैं इसे इस ह़ालत में क्यूं पाता हूं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई : "ऐ मूसा ! इस ने मुझ से वोह मक़ाम त़लब किया जिस तक अपने आ'माल के साथ नहीं पहुंच सकता था चुनान्चे मैं ने इसे उस मक़ाम तक पहुंचाने के लिये इस **मुसीबत** में मुब्तला किया है ।"

(تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص۱۷۳)

www.dawateislami.net

कीचड़ में लिथड़ा हुवा बच्चा (ह़िकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ बुलन्दिये द-रजात के लिये भी नेक बन्दों को इम्तिह़ानात में मुब्तला फ़रमाता है, बेशक **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ के हर काम में ह़िक्मत होती है । अलबत्ता येह ज़रूरी नहीं कि सिर्फ़ नेक बन्दों ही पर इम्तिह़ान आए, बसा अवक़ात गुनहगारों को भी मुसीबतों में मुब्तला कर के गुनाहों की आलू-दगियों से पाक किया जाता है । चुनान्चे **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपनी तक़रीरे दिल पज़ीर में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **बा यज़ीद बिस्त़ामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی किसी जगह से गुज़र रहे थे, मुला-ह़ज़ा फ़रमाया, एक **बच्चा** कीचड़ में गिर गया है और उस का बदन और लिबास गन्दगी में लिथड़ गए हैं, लोग देखते हुए गुज़र जाते हैं, कोई परवा भी नहीं करता ! कहीं दूर से मां ने देखा, दौड़ती हुई आई, दो थप्पड़ **बच्चे** के लगाए, कपड़े उतार कर धोए, उसे ग़ुस्ल दिया । **ह़ज़रत** (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) को येह देख कर वज्द आ गया और फ़रमाया कि येही ह़ाल हमारा और **रह़मते इलाही** (عَزَّوَجَلَّ) का है । हम गुनाहों की दलदल में लिथड़ जाते हैं, किसी को क्या परवा ! मगर **रह़मते इलाही** (عَزَّوَجَلَّ) का दरिया जोश में आता है, हम को **मुसीबतों** के ज़रीए़ दुरुस्त किया जाता है और तौबा व इ़बादात के पानी से ग़ुस्ल दे कर साफ़ फ़रमाता है । (मुअ़ल्लिमे तक़रीर, स. 33 मुलख़्ख़सन) जब मेह़रबान मां कुछ सज़ा दे कर तम्बीह (या'नी ख़बरदार) कर सकती है तो हमारा ख़ालिक़ व मालिक

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ इस से कहीं ज़ियादा मेह्रबान है, बा'ज़ अवक़ात सज़ा दे कर इस्लाह़ फ़रमाता है।

रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन व मुअमिनात को इम्तिह़ानात में मुब्तला कर के इन के सय्यिआत (या'नी गुनाह) मिटाता और द-रजात बढ़ाता है। लिहाज़ा जब भी मुसीबत आए पारह 20 **सू-रतुल अ़न्कबूत** की दूसरी आयते करीमा को ज़ेह्न में ले आइये :

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْۤا اَنْ يَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝۲

(پ ۲۰، العنكبوت ۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएं कि कहें : हम ईमान लाए और उन की आज़्माइश न होगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कोई भलाई नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : जो हर चालीस रात में एक मर्तबा भी **आफ़त** या फ़िक्र व परेशानी में मुब्तला न हो उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां कोई भलाई नहीं।

(مُكَاشَفَةُ القُلُوب ص١٥)

आफ़त व राह़त के बारे में पुर ह़िक्मत रिवायत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यवी आफ़त व मुसीबत मुसल्मान के ह़क़ में अक्सर बहुत बड़ी **ने'मत** होती है, जैसा कि **मन्क़ूल** है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : जब मैं किसी बन्दे पर **रह़्म** फ़रमाना चाहता

www.dawateislami.net

हूं तो उस की बुराई का बदला दुन्या ही में दे देता हूं, कभी बीमारी से, कभी घर वालों में मुसीबत डाल कर, कभी तंगिये मआ़श (या'नी तंगदस्ती) से, फिर भी अगर कुछ बचता है तो मरते वक़्त उस पर सख़्ती करता हूं ह़त्ता कि जब वोह मुझ से मुलाक़ात करता है तो **गुनाहों से ऐसा पाक होता है जैसा कि उस दिन था जिस दिन कि उस की मां ने उसे जना था।** और मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम कि मैं जिस बन्दे को **अ़ज़ाब** देने का इरादा रखता हूं उस को उस की हर नेकी का बदला दुन्या ही में देता हूं, कभी जिस्म की सिह़्ह़त से, कभी फ़राख़िये रिज़्क़ से (या'नी रोज़ी बढ़ा कर), कभी अहलो इ़याल की ख़ुशह़ाली से, फिर भी अगर (नेकियों का बदला देना) कुछ (बाक़ी) रह जाता है तो मरते वक़्त उस पर आसानी कर दी जाती है ह़त्ता कि जब मुझ से मिलता है तो उस की नेकियों में से (उस के पास) कुछ भी (बाक़ी) नहीं रहता कि वोह नारे जहन्नम से बच सके। (شرحُ الصّدور ص ۲۸)

आसाइशों पर मत फूलो !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत के पेशे नज़र गाड़ियों, इ़मारतों, दौलतों, सिह़्ह़तों और त़रह़ त़रह़ की ने'मतों की अपने ऊपर कसरत को देख कर डर जाना चाहिये कि कहीं येह दुन्या में नेकियों की जज़ा न हो और ग़ुरबतों, आफ़तों, बीमारियों और त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों का अपने ऊपर सिल्सिला देख कर सब्र करना और दिल बड़ा रखना चाहिये कि हो सकता है येह आख़िरत की राह़त सामानियों का पेशख़ैमा

www.dawateislami.net

हो । हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दोनों जहानों की भलाइयां त़लब करते हैं ।

डर था कि इस्यां की सज़ा, अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उन की रह़मत ने सदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसीबत की अ़जीब ह़िक्मत (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि **एक नबी** عَلَيْهِ السَّلَام ने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब्बुल इ़ज़्ज़त ! **मोमिन** बन्दा तेरी **इत़ाअ़त** करता और तेरी **मा'सियत** (ना फ़रमानी) से बचता है (लेकिन) तू इस से दुन्या लपेट लेता और इस को आज़्माइशों में डालता है । जब कि **काफ़िर** तेरी इत़ाअ़त नहीं करता बल्कि तुझ पर और तेरी **मा'सियत** (ना फ़रमानी) पर **जुर-अत** करता है लेकिन तू उस से **मुसीबत** को दूर रखता और उस के लिये दुन्या कुशादा कर देता है (आख़िर इस में क्या ह़िक्मत है ?) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : बन्दे भी मेरे हैं और मुसीबत भी मेरे इख़्तियार में है और सब मेरी **ह़म्द** के साथ मेरी तस्बीह़ करते हैं, **मोमिन के ज़िम्मे गुनाह होते हैं तो मैं उस से दुन्या को दूर कर के उस को आज़्माइश में डालता हूं तो येह** (आज़्माइश व मुसीबत) **उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है** ह़त्ता कि वोह मुझ से मुलाक़ात करेगा तो मैं उसे नेकियों का बदला दूंगा । और **काफ़िर** की (दुन्यवी ए'तिबार से) कुछ नेकियां होती हैं तो मैं उस के लिये रिज़्क़ कुशादा करता और मुसीबत को

www.dawateislami.net

उस से दूर रखता हूं तो यूं उस की नेकियों का बदला दुन्या में ही दे देता हूं ह़त्ता कि जब वोह मुझ से मुलाक़ात करेगा तो मैं उस के गुनाहों की उस को सज़ा दूंगा। **(اِحیاء العلوم ج ٤ ص ١٦٢)**

हाथों हाथ सज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के हर हर काम में ह़िक्मतें होती हैं। तक्लीफ़ पर **सब्र** कर के अज्र ह़ासिल करना चाहिये क्यूं कि आफ़ातो बलिय्यात, **कफ़्फ़ारए सय्यिआत** और बाइ़से तरक्क़िये द-रजात होती हैं। (या'नी आफ़तें और बलाएं गुनाह मिटाने और द-रजे बढ़ाने का ज़रीआ़ होती हैं) चुनान्चे **ताजदारे रिसालत**, मह़बूबे रब्बिल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उस के गुनाह की सज़ा फ़ौरी त़ौर पर उसे दुन्या ही में दे देता है।**

(مُسنَد اِمام احمد بن حَنبل ج ٥ ص ٦٣٠ حدیث ١٦٨٠٦)

आख़िरत की मुसीबत से दुन्या की मुसीबत आसान है

आह ! हम तो गुनाहों में सरापा डूबे हुए हैं, **काश !** जब भी कोई मुसीबत पेश आए उस वक़्त येह ज़ेह्न बनाना नसीब हो जाए कि शायद आख़िरत के बजाए **दुन्या ही में सज़ा** दे दी गई है। इस त़रह़ उम्मीद है कि **सब्र** आसान हो जाएगा। **ख़ुदा की क़सम !** मरने के बा'द मिलने वाली सज़ा के मुक़ाबले में दुन्या की सज़ा इन्तिहाई आसान है, दुन्या की मुसीबत आदमी बरदाश्त कर ही लेता है मगर **आख़िरत की मुसीबत**

www.dawateislami.net

बरदाश्त करना ना मुम्किन है यहां तक कि अगर कोई कह दे कि मैं **क़ब्र** या जहन्नम का अ़ज़ाब बरदाश्त कर लूंगा तो वोह **काफ़िर** हो जाएगा ।

हमारे ह़क़ में क्या बेहतर है, हमें नहीं मा'लूम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है यक़ीनन वोह सह़ीह़ करता है, बसा अवक़ात बा'ज़ मुआ़-मलात बन्दे की समझ में नहीं आते लेकिन बहुत मर्तबा उस के ह़क़ में उसी में बेहतरी होती है । चुनान्चे पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत 216 में इर्शाद होता है :

وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۠ ﴿۲۱۶﴾

(پ۲،البقرة : ۲۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जानता है और तुम नहीं जानते ।

हर एक को इम्तिह़ान के लिये तय्यार रहना चाहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ईमान के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला ही काम्याब है, बड़ा नाज़ुक मुआ़-मला है, शैत़ान हर वक़्त **ईमान** की घात में लगा रहता है । मुसीबत आने पर **सब्र** करते हुए हर ह़ाल में

www.dawateislami.net

रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये। पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हमारा मालिको मुख़्तार है। जिसे चाहे **बे ह़िसाब जन्नत** में दाख़िल फ़रमाए और जिसे चाहे **इम्तिह़ान** में मुब्तला कर के **सब्र** की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कर इन्आ़मो इक्राम की बारिशें फ़रमाए। मोमिने कामिल वोही है जो हर ह़ाल में रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहे। मुसीबतों की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** कर के ख़ुद को हमेशा के लिये जहन्नम के ह़वाले कर देने वाला शख़्स बहुत ही बड़ा बद नसीब है। **हर मुसल्मान को इम्तिह़ान के लिये तय्यार रहना चाहिये, ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ का पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 214 में फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَ لَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर अगलों की सी रूदाद (ह़ालत) न आई।

कंघियों से गोश्त नोचे जाते थे

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** सफ़ह़ा 71 पर मुन्द-र-जए बाला आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : और जैसी सख़्तियां उन (या'नी अगले मुसल्मानों) पर गुज़र चुकीं अभी तक तुम्हें पेश न आईं। येह आयत **ग़ज़्वए अह़ज़ाब** के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई

www.dawateislami.net

जहां मुसल्मानों को सर्दी और भूक वग़ैरा की सख़्त तक्लीफ़ें पहुंची थीं । इस में उन्हें **सब्र** की तल्क़ीन फ़रमाई गई और बताया गया कि **राहे ख़ुदा** में तकालीफ़ बरदाश्त करना क़दीम से ख़ासाने ख़ुदा का मा'मूल रहा है, अभी तो तुम्हें पहलों की सी तक्लीफ़ें पहुंची भी नहीं ।[1] "बुख़ारी शरीफ़" में ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़ब्बाब बिन अरत** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **हुज़ूर सय्यिदे आलम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**तुम से पहले लोग गिरिफ़्तार किये जाते थे, ज़मीन में गढ़ा खोद कर उस में दबा दिये जाते थे फिर आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिये जाते थे और लोहे की कंघियों से उन के गोश्त नोचे जाते थे और इन में से कोई मुसीबत उन्हें उन के दीन से रोक न सकती थी ।**"

(بُخارِی ج ٤ ص ٣٨٦ حدیث ٦٩٤٣ مُلَخَّصاً)

मुसीबत छुपाने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बीमारी और परेशानी पर शिक्वा करने के बजाए **सब्र** की आ़दत बनानी चाहिये कि शिकायत करने से मुसीबत दूर नहीं हो जाती बल्कि बे सब्री करने से **सब्र** का अज्र ज़ाएअ़ हो जाता है । बिला ज़रूरत **बीमारी व मुसीबत** का इज़्हार करना भी अच्छी बात नहीं । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे**

मदीना

1 : ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 71

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

छुपाया और लोगों से उस की शिकायत न की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **पर हक़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे ।''**

(مُعْجَم اَوْسَط ج ۱ ص ۲۱٤ حدیث ۷۳۷)

दाढ़ में दर्द के सबब मैं सो न सका ! (ह़िकायत)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **अह़्नफ़ बिन क़ैस** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक बार मेरी **दाढ़** में शदीद दर्द हुवा जिस के सबब मैं सारी रात सो न सका । मैं ने दूसरे दिन अपने **चचाजान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان की ख़िदमत में शिकायत की, कि **''मैं दाढ़ के दर्द की वज्ह से सारी रात सो न सका ।''** इस बात को मैं ने तीन बार दोहराया । इस पर उन्हों ने फ़रमाया : तुम ने एक ही रात में होने वाले अपने दर्द की इतनी ज़ियादा शिकायत कर डाली ! ह़ालां कि मेरी **आंख** को ज़ाएअ़ हुए **तीस बरस** हो चुके हैं, (अगर्चे देखने वालों को मा'लूम हो मगर अपनी ज़बान से) मैं ने कभी किसी से इस की शिकायत नहीं की ! **(اِحیاءُ العُلُوم ج ٤ ص ١٦٤) अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते
नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

32 रूहानी इलाज

गुमशुदा को बुलाने के 3 आ'माल

﴾1﴿ **एक** बड़े काग़ज़ के चारों कोनों पर يَاحَقُّ लिख कर आधी रात को या किसी भी वक़्त दोनों हाथों पर रख कर खुले आस्मान तले खड़े हो कर दुआ कीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ या तो गुमशुदा फ़र्द जल्द वापस आ जाएगा या उस की ख़बर मिल जाएगी । (मुद्दत : ता हुसूले मुराद)

﴾2﴿ 40 दिन तक रोज़ाना दो रक्अत नफ़्ल पढ़ कर يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ 119 बार पढ़िये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ भागा हुवा शख़्स वापस आ जाएगा ।

﴾3﴿ अगर कोई चीज़ गुम हो गई हो या कोई शख़्स ग़ाइब हो गया हो तो لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 1008 बार पढ़िये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो गुमशुदा शै या आदमी मिल जाएगा । (मुद्दत : ता हुसूले मुराद)

गुमशुदा इन्सान, गाड़ी और माल वापस मिले (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

﴾4﴿ **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत पर मज़बूत़ भरोसे के साथ चलते फिरते, वुज़ू बे वुज़ू ज़ियादा से ज़ियादा ता'दाद में **या रब्बे मूसा या रब्बे कलीम ।** بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط पढ़ते रहिये । इसी दौरान चन्द बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये । गुमशुदा इन्सान, सोना, माल, गाड़ी वग़ैरा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मिल जाएंगे । बल्कि दीगर ह़ाजात के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद होगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

ह़ाजतें पूरी होने के लिये 3 आ'माल

﴿5﴾ يَااَللّٰهُ 39 बार लिख कर बाज़ू पर बांध कर या गले में पहन कर जिस ह़ाकिम या अफ़्सर के पास जिस जाइज़ काम के लिये जाए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह उस की ह़ाजत पूरी करे ।

﴿6﴾ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام 321 बार पढ़ कर ह़स्बे तौफ़ीक़ कोई मीठी चीज़ बच्चों में तक़्सीम कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुराद पूरी होगी ।

﴿7﴾ قَلَّتْ حِيَلَتِيْ اَنْتَ وَسِيْلَتِيْ اَدْرِكْنِيْ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم[1] उठते बैठते, चलते फिरते, बा वुज़ू बे वुज़ू पढ़ते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुराद पूरी होगी ।

बर्फ़बारी रोकने के लिये

﴿8﴾ يَاحَافِظُ , يَاخَافِضُ लोहे के तवे की उलटी त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के येह दोनों नाम मुबारक उंगली से लिख कर आस्मान के नीचे रख दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **बर्फ़बारी** बन्द हो जाएगी ।

दुश्मन से ह़िफ़ाज़त के 4 अवराद

﴿9﴾ لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चलते फिरते उठते बैठते ब कसरत पढ़ने से दुश्मन के शर से ह़िफ़ाज़त होगी और रह़मते रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ से दुश्मने अय्यारो मक्कार के तमाम वार ख़ाली जाएंगे ।

مدینہ

1 : **तरजमा : या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे ह़ीले ख़त्म हो गए आप ही मेरा वसीला हैं मुझे संभालिये ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

《10》 يَاقَابِضُ، يَا بَاسِطُ 30 बार हर रोज़ पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन पर फ़त्ह़ ह़ासिल होगी ।

《11》 يَاحَافِظُ، يَاخَافِضُ 500 बार पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन के सदमे से अमान में रहेंगे ।

《12》 अगर त़ाक़त वर दुश्मन से जान व माल को ख़त़रा लाह़िक़ हो तो हर नमाज़ के बा'द يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام 421 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूदे पाक) पढ़िये फिर गिड़गिड़ा कर ह़िफ़ाज़त की दुआ़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन के शर्रो फ़साद से मह़फ़ूज़ रहेंगे ।

कश्ती (और हर त़रह़ की सुवारी) **की ह़िफ़ाज़त के 2 अवराद**

《13》 **कश्ती** में सुवार होने से पहले لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه 21 बार पढ़ लेने वाले का सारा सफ़र اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आराम व सुकून के साथ कटेगा और वोह **कश्ती** डूबने से बची रहेगी ।

《14》 **कश्ती** या किसी भी सुवारी पर सुवार होते वक़्त يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ 132 बार पढ़ लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه रास्ते की आफ़तों से ह़िफ़ाज़त होगी यहां तक कि ज़ोरदार तूफ़ान में भी कश्ती डूबने से बची रहेगी ।

सफ़र में आसानी व काम्याबी के 2 आ'माल

《15》 **सफ़र** शुरूअ़ करने से पहले لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 11 मर्तबा पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सफ़र में आसानी होगी ।

《16》 لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 49 बार लिख कर **सफ़र** में साथ रखने से घर आने

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

तक ज़मीनी और दरियाई आफ़तों से हिफ़ाज़त रहेगी और जिस मक़्सद के लिये सफ़र किया होगा उस में काम्याबी नसीब होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ

शादी की रुकावट के 3 रूहानी इलाज

《17》 **जिन** लड़कियों की शादी न होती हो या मंगनी हो कर टूट जाती हो वोह नमाज़े फ़ज्र के बा'द يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام 312 बार पढ़ कर अपने लिये नेक रिश्ता मिलने की दुआ़ करें, اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ जल्द **शादी** हो और ख़ाविन्द भी नेक मिले।

《18》 يَاحَیُّ يَاقَیُّوْمُ 143 बार लिख कर ता'वीज़ बना कर कुंवारा अपने बाज़ू में बांधे या गले में पहन ले اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ उस की जल्द **शादी** हो जाएगी और घर भी अच्छा चलेगा।

《19》 लड़की या लड़के के रिश्ते में रुकावट हो या इस में बन्दिश का शुबा हो तो रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज्र बा वुज़ू हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط के साथ **सू-रतुत्तीन** 60 मर्तबा पढ़िये। اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ चालीस दिन के अन्दर अन्दर काम हो जाएगा।

ह़ादिसात से ह़िफ़ाज़त वाला अ़मल

《20》 بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ[1] (ابوداؤد ج٤ص٤٢٠حديث٥٠٩٥)

एक साहिब का कहना है **:** घर से बाहर निकलने की (ऊपर दी हुई) दुआ़

مدینہ

1 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, बुराई से बचने और नेकी करने की कुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है।

www.dawateislami.net

जब से पढ़नी शुरूअ़ की है اَلْحَمْدُ لِلّٰه कई बार ह़ादिसे से बचा हूं और न जाने कितनी बार तो मेरी गाड़ी के शीशे दूसरी गाड़ियों के साथ टकरा गए हैं लेकिन **अल्लाह** के फ़ज़्ल से कोई ह़ादिसा या नुक़्सान नहीं हुवा।

मुक़द्दमा जीतने के लिये 2 आ'माल

﴾21﴿ **जो** ना जाइज़ मुक़द्दमे में फंस गया हो, **मुक़द्दमे** की तारीख़ वाले दिन يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام 654 बार पढ़ कर कोर्ट में जाए, اِنْ شَآءَاللّٰه تَعَالٰى फ़ैसला इसी के ह़क़ में होगा।

﴾22﴿ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾ (پ۱۵، بنی اسرآءیل: ۸۱)

मुक़द्दमे की काम्याबी के लिये रोज़ाना किसी भी एक नमाज़ के बा'द 133 बार पढ़िये। ह़क़ पर हों तो पढ़िये कि नाह़क़ पढ़ने वाला अज़ख़ुद मुसीबत में गिरिफ़्तार हो सकता है।

चिल्ला कशी में चोट खाई हो तो

﴾23﴿ يَاوَاحِدُ 3000 बार 11 दिन तक रोज़ाना पढ़िये। (अव्वल आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़िये) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल पुर सुकून हो जाएगा।

क़ैद से रिहाई के 2 आ'माल

﴾24﴿ अगर कोई शख़्स ज़ुल्मन **क़ैद** हो गया हो तो चलते फिरते, उठते बैठते يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ कसरत से पढ़े और يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ काग़ज़ पर

www.dawateislami.net

लिख कर ता'वीज़ बना कर पहन भी ले, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द रिहाई पाएगा ।

﴿25﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ब कसरत पढ़ा करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **क़ैद** से जल्द रिहा हो जाएगा ।

कूंएं या नहर के पानी की कमी का रूहानी इलाज

﴿26﴾ **अगर** किसी कूंएं या नहर का पानी कम हो जाए तो ठीकरी पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط लिख कर उस कूंएं या नहर में डाल दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه تَعَالٰى **पानी** में ब-र-कत हो जाएगी ।

दुकान, मकान, ख़ानदान व सामान की हिफ़ाज़त के 5 आ'माल

﴿27﴾ **दुकान** या मकान या माल व अस्बाब पर रोज़ाना يَا اَللّٰهُ 49 बार पढ़ कर दम कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुख़्तलिफ़ नुक़्सानात से हिफ़ाज़त होगी ।

﴿28﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 69 बार काग़ज़ पर लिख (या लिखवा) कर फ़्रेम बनवा कर मकान या दुकान वग़ैरा में लटका दीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वहां **आसेब** नहीं आएगा और अगर पहले से होगा तो भाग जाएगा ।

﴿29﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ पढ़ कर अगर इस्ति'माल की चीज़ों पर दम कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हिफ़ाज़त** भी होगी और ब-र-कत भी ।

﴿30﴾ **रक़म** और हर क़िस्म की चीज़ के लैन दैन (या'नी लेने और देने)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

से पहले يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام 21 बार पढ़ने की जो आ़दत बना लेंगे, वोह اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मुआ़-मले में नुक़्सानात से बचे रहेंगे।

﴾31﴿ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ 65 बार लिख कर अपने पास रखने वाला اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़ालिमों के **ज़ुल्म** से महफ़ूज़ रहेगा।

सर दर्द से मिनटों में नजात

(बयान कर्दा तिब्बी और देसी इ़लाज अपने त़बीब के मश्वरे से कीजिये)

एक चम्मच चीनी और दो अ़दद बड़ी इलायचियों के दाने निकाल कर मुंह में रख लीजिये। और इन्हें च्यूंगम की त़रह़ चबाते और चूस चूस कर रस पीते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तक़्रीबन पांच मिनट में शदीद सर दर्द से नजात मिल जाएगी, चन्द दिन के इस्ति'माल से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर का मरज़ जाता रहेगा। शूगर के मरीज़ चीनी के बजाए 12 अ़दद हरे पोदीने के पत्ते इलायचियों के साथ इस्ति'माल करें।

यूरिक एसिड का इ़लाज, मूली और लीमूं से

एक दरमियानी साइज़ की मूली के टुकड़े कर के उस पर एक लीमूं छिड़क कर, दीगर नमक मसाला डाले बिग़ैर नहार मुंह खा लीजिये एक घन्टे तक और कोई चीज़ मत खाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ "यूरिक एसिड" नॉर्मल हो जाएगा। (येह अ़मल 7 रोज़ तक कीजिये)

शूगर, कोलेस्ट्रोल और हाई ब्लड प्रेशर का आसान इलाज

करेले छील कर सुखा लीजिये, फिर बीज समेत पीस कर पावडर बना लीजिये । सुब्ह़ व शाम आधी आधी चमची खाने से शूगर, हाई ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रोल के मरज़ में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा ।

मुख़्तलिफ़ बीमारियों और परेशानियों का रूह़ानी इलाज

﴾32﴿ जिस्मानी, नफ़्सियाती, मुख़्तलिफ़ बीमारियों, टेन्शन, डिप्रेशन, अ-सरात, जादू, नज़रे बद और बन्दिश वग़ैरा के लिये एक अ़जीबुल असर अ़मल है। तमाम घर वाले अगर येह अ़मल करते रहें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घरेलू ना चाक़ियों और परेशानियों से नजात मिले, घर अम्न का गह्वारा बने ।

फ़ज्र की दो सुन्नतों और ज़ोह्र, मग़रिब व इ़शा के फ़र्ज़ों के बा'द वाली दो सुन्नतों में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** के बा'द क़ुरआने करीम की आख़िरी छ सूरतें इस त़रह़ पढ़िये : पहली रक्अ़त में **सू-रतुल काफ़िरून, सू-रतुन्नस्र** और **सू-रतुल्लहब** और दूसरी रक्अ़त में **सू-रतुल इख़्लास, सू-रतुल फ़लक़** और **सू-रतुन्नास** पढ़िये । हर सूरत के इब्तिदा में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط पढ़िये । (मुद्दते इ़लाज : ता हुसूले शिफ़ा) कभी कभी येह सूरतें तर्क कर के कोई और सूरत पढ़ लीजिये । **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 548 पर मस्अला नम्बर 30 पर है : सूरतों का मुअ़य्यन (Fix) कर लेना कि इस नमाज़ में हमेशा वोही सूरत पढ़ा करे, मक्रूहे (तन्ज़ीही) है, मगर जो सूरतें अह़ादीस में वारिद हैं उन को कभी कभी पढ़ लेना मुस्तह़ब है, मगर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

मुदा-वमत (हमेशगी) न करे कि कोई वाजिब न गुमान कर ले ।

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

23 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 सि.हि.
06-12-2015

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

ماخذ ومراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دار المعرفۃ بیروت	تنبیہ المغترین		قرانِ مجید
دار صادر بیروت	احیاء العلوم	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	خزائن العرفان
دار الکتب العلمیۃ بیروت	مکاشفۃ القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بخاری
دار الکتب العلمیۃ بیروت	عیون الحکایات	دار ابن حزم بیروت	مسلم
مرکز اہلسنت برکات رضا الہند	شرح الصدور	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابوداود
مکتبۃ الحقیقۃ استنبول	شواہد النبوۃ	دار الفکر بیروت	مسند امام احمد بن حنبل
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دار الکتب العلمیۃ بیروت	معجم اوسط
قادری پبلشرز مرکز الاولیاء لاہور	معلم تقریر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الفردوس بماثور الخطاب
☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆	المکتبۃ العصریۃ بیروت	المرض والکفارات

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	दाढ़ में दर्द के सबब मैं सो न सका !	
अल्लाह के हर काम में हि़क्मत होती है	3	(हि़कायत)	21
अल्लाह जो करता है बेहतर करता है	3	**32 रूहा़नी इ़लाज**	22
अगर डाकू आ जाता तो.....?	5	गुमशुदा को बुलाने के 3 आ'माल	22
जिगर की तब्दीली (हि़कायत)	6	गुमशुदा इन्सान, गाड़ी और	
आज़्माइशों की बारिश	6	माल वापस मिले (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)	22
मुझे नाबीना रहना मन्ज़ूर है	8	हा़जतें पूरी होने के लिये 3 आ'माल	23
दुख्यारा सब तक्लीफ़ें भूल जाएगा !	8	बर्फ़बारी रोकने के लिये	23
''ईमान'' का लिबास (हि़कायत)	9	दुश्मन से हि़फ़ाज़त के 4 अवराद	23
करबला वालों से बढ़ कर		कश्ती (और हर त़रह़ की सुवारी) की	
मुसीबत ज़्दा कौन ?	10	हि़फ़ाज़त के 2 अवराद	24
रोशन क़ब्रें	10	सफ़र में आसानी व काम्याबी के 2 आ'माल	24
काश ! हमारे बदन क़ैंचियों से काटे जाते !	11	शादी की रुकावट के 3 रूहा़नी इ़लाज	25
दरिन्दों ने पेट फाड़ डाला था (हि़कायत)	12	हा़दिसात से हि़फ़ाज़त वाला अ़मल	25
कीचड़ में लिथड़ा हुवा बच्चा (हि़कायत)	13	मुक़द्दमा जीतने के लिये 2 आ'माल	26
कोई भलाई नहीं	14	चिल्ला कशी में चोट खाई हो तो	26
आफ़त व राह़त के बारे में पुर हि़क्मत रिवायत	14	क़ैद से रिहाई के 2 आ'माल	26
आसाइशों पर मत फूलो !	15	कूंएं या नह्र के पानी की कमी का	
मुसीबत की अ़जीब हि़क्मत (हि़कायत)	16	रूहा़नी इ़लाज	27
हाथों हाथ सज़ा	17	दुकान, मकान, ख़ानदान व सामान की	
आख़िरत की मुसीबत से दुन्या की		हि़फ़ाज़त के 5 आ'माल	27
मुसीबत आसान है	17	सर दर्द से मिनटों में नजात	28
हमारे ह़क़ में क्या बेहतर है, हमें नहीं मा'लूम	18	यूरिक एसिड का इ़लाज, मूली और लीमूं से	28
हर एक को इम्तिह़ान के लिये		शूगर, कोलेस्ट्रोल और हाई ब्लड प्रेशर	
तय्यार रहना चाहिये	18	का आसान इ़लाज	29
कंघियों से गोश्त नोचे जाते थे	19	मुख़्तलिफ़ बीमारियों और परेशानियों का	
मुसीबत छुपाने की फ़ज़ीलत	20	रूहा़नी इ़लाज	29

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

40 साल के आ'माल....

❁ इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : जो मस्जिद में दुन्या की बात करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के **चालीस बरस** के नेक आ'माल अकारत (या'नी बरबाद) फ़रमा दे[1] ❁ जिस ने क़स्दन (जान बूझ कर) एक वक़्त की (नमाज़) छोड़ी, **हज़ारों बरस जहन्नम** में रहने का मुस्तहिक़ (ह़क़दार) हुवा[2] ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने क़ातिलाना ह़म्ले में **शदीद ज़ख़्मी** होने के बा वुजूद **नमाज़** अदा फ़रमाई।[3]

---

1 : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 16, स. 311 ब ह़वाला غمزُ العُیون ۳/۱۹۰۔

2 : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 158, 3 : اَلْکَبائِر ص ۲۲ مُلَخَّصاً۔

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net